22–4–67 ओमशांति रात्रीक्लास

जानते हो बाबा आया हुआ है। बाबा ने आकर परिचय दिया है। जिनको भक्तिमार्ग में बुलाते रहे वो तो आये हुए हैं तो बड़ी खुशी की बात हैं। भल छोटी बच्ची है जितना यह अपने को उंच ते उंच और साहुकार समझती है उतने बड़े2 प्रेजीडेंट भी कुछ नहीं हैं। वो तो तुच्छ हैं ;क्योंकि सब विनाश हो जावेगा। हम विश्व के मालिक बनते हैं। बनने की ही खुशी होनी चाहिए। धन की खुशी नहीं है। अभी तो आपकी मत पर चलना है। इसमें भी मेहनत है। मत पर चल नहीं सकते हैं। एक तरफ बाप मत देते हैं ,दुसरी तरफ माया खड़ी है। यह है युद्ध। अक्सर करके गरीब जो हैं उनके लिए बड़ा सहज दिखाई पड़ता है। नशा जिनको कापारी चढ़ता है तो कोई चीज भी अखर नहीं आती। थोड़ा–बहुत कमाते खाते रहें बाकी भारत की सेवा में लगाया। बापूजी ने भी सेवा ही की थी कि रामराज्य स्थापन करें। कई समझते हैं यह तो राक्षस राज्य है। अब तुम समझते हो कि बाबा हमको हर 5000वर्ष बाद बड़े प्यार से कहते हैं बच्चों तुमको आज से 5000वर्ष पहले रामराज्य दिया था ना। हमारी शिवजयंती मनाते हो ना। इस द्वारा कोई कह नहीं सके सिवाय इस बाप के। बाप कहते हैं कि मुझे याद करो तो पाप भस्म हो जावेंगे। कोई तकलीफ वो खर्चा आदि नहीं है। शिव को ,कृष्ण को ल.ना. को भक्ति में याद करते हैं तो खर्चा लगता है क्या?घर में चित्र है। चीज वो ही है। फिर भी दूर2 भटकने जाते हैं। यह चक्र पूरा कर फिर करना है। नाम भी वो ही कृष्ण ही है। फिर दूर2 क्यों जाते हो?बुद्धि काम कुछ नहीं करती। इसको कहा जाता है पत्थर बुद्धि। ज्ञान से होती है पारस बुद्धि। तुम समझते हो कि हम भी कुछ नहीं जानते थे। जनावरों से भी बदतर था। यह बाबा भी कहते हैं ना। भल बहुत अनुभव किया। बड़ों2 से मिलते थे। वाइसराय के पास दौड़ते रहते थे। पासले लेते थे। कहते थे हम तो मर्चेंट प्रिंस बहुत प्यार से चिट दे देते थे। अब समझते हैं कि बर्थ नॉट ए पेनी था। अब तो बाप मिला हुआ है तो कापारी नशा चढ़ा हुआ है। गरीबों को तो बहुत याद, बहुत नशा चढ़ा रहना चाहिए। अंदर में कितनी खुशी रहती है। यही धंधा हो कि दूसरों को आप समान बनावें। तुम बच्चों जैसा अच्छा.....हम भारत को श्रेष्ठ बनाते हैं तो अपने को भी बनाते हैं। यहां बैठे हुए हो तो कितना अतिन्द्रिय सुख रहना चाहिए। उस उमंग से बैठ समझाओ तो कितना वो खुश हो जावें। ऐसी चलन चाहिए। बहुत मीठा बनना चाहिए जिससे नाम बदनाम नहीं हो। सतगुरू का निंदक.....समाचार आया था कि सेन्टर के बाहर बैठकर झगड़े ।तो ऐसे क्या ठौर पावेंगे?रूठकर आना छोड़ देते हैं। घर बैठ जाते हैं। बाप कहते हैं भल झगड़ो मगर पढ़ाई नहीं छोड़ो। ना पढ़ने वाले क्या पद पावेंगे। बड़ा भारी देह अहंकार (है)। नही ंतो कितनी खुशी रहनी चाहिए। बाबा की ही मत पर चलना चाहिए। बाबा जो .....आज्ञा दे ;परंतु चलते नहीं हैं। माया भुला देती है। कोई ना कोई नशा आ जाता है। काम का नशा, क्रोध का नशा.....। गाते हैं बाबा आप आवेंगे तो हम बलिहार जावेंगे। बलिहार जाना कोई मासी का घर नहीं है। कोई विरले बलिहार जाते हैं। फिर ऐसी सर्विस करते हैं। गुजरातियों को जगाना चाहिए। कुम्भकरण की नींद में सोये पड़े हैं। स्वर्ग क्या ,नर्क क्या बिल्कुल ही पता नहीं है। बंदर से भी बदतर हैं। तुम सीतायें सब रावण की जेल में शोक वाटिका में हो। तुम बच्चों को औरों को रास्ता बताने का बहुत शौक चाहिए। बिल्कुल अंधेरे में हैं। इसलिए कहा भी जाता है ब्लाइंड फेथ। मुसलमान भी हिंदुओं को काफर कहते हैं। बाप को कल्प2 आकर कितनी मेहनत करनी पड़ती है। बच्चे कितनी मेहनत करते हैं बड़ों2 को समझाने में। बड़े चित्र भी ले जायेंगे। बाबा तो आर्डर देते हैं मुख्य2 जो 10/12 चित्र हैं वो एक मास में (बने) तो सर्विस कितनी तीखी हो जावे। बहुत तो टूलेट हो जावेंगे। हम आत्मा (सतोप्रधान) विश्व की मालिक थीं। अब सब तमोप्रधान हैं। झाड़ को खतम होना है। यह है ही ओल्ड वर्ल्ड। अब तुम सतोप्रधान बनते हो। जानते हो नई दुनियां थी फिर पुरानी दुनियां हुई है। फिर पुरानी से नई बननी है। दुनियां को तो कुछ भी (मुरली अधूरी है)